



भारतीय लोक संस्कृति और पुरातत्व

INDIAN FOLK CULTURE AND ARCHAEOLOGY



Set of 2 Volumes

सम्पादक
रामकुमार अहिरवार



Published by:

B.R. Publishing Corporation

425, Nimri Colony, Ashok Vihar, Phase-IV

Delhi-110 052

E-Mail : brpc@vsnl.com

First Published 2016

© Editor

ISBN 9789350502952 (set of 2 Vols.)

Digitally Printed at D.K. Fine Art Press (P) Ltd., Delhi

Publisher's note:

Every possible effort has been made to ensure that the information contained in this book is accurate at the time of going to press, and the publisher and author cannot accept responsibility for any errors or omissions, however caused. No responsibility for loss or damage occasioned to any person acting, or refraining from action, as a result of the material in this publication can be accepted by the editor, the publisher or the author. The Publisher is not associated with any product or vendor mentioned in the book. The contents of this work are intended to further general scientific research, understanding and discussion only. Readers should consult with a specialist where appropriate.

Every effort has been made to trace the owners of copyright material used in this book, if any. The editor and the publisher will be grateful for any omission brought to their notice for acknowledgement in the future editions of the book.

All Rights reserved under International Copyright Conventions. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written consent of the publisher and the copyright owner.

Cataloging in Publication Data--DK

Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>

Bhārāṭīya loka saṁskṛti aura purātattva = Indian folk culture and archaeology / sampādaka, Rāmakumāra Ahiravāra.
volumes cm

Hindi and English.

Transcript of papers on Indian folk culture and archaeology, presented at a two days national seminar during 24-25 April 2015.

Includes bibliographical references.

ISBN 9789350502952 (2 vols.)

1. Folklore--India--Congresses. 2. India--Social life and customs--Congresses. 3. India--Antiquities--Congresses. I. Ahiravāra, Rāmakumāra, 1968- editor. II. Title: Indian folk culture and archaeology.

25. लोक चित्त-सम्भूत जातक कथा रामकुमार अहिरवार	149
26. लोक नायक विक्रमादित्य और राजा भोज रमण सोलंकी	157
27. लोक संस्कृति और साहित्य में ग्राम्य जीवन रमेश कुमार रावत एवं राजेश लाल मेहरा	165
28. लोक न्याय प्रणाली एम.एम. पचौरी एवं नितीश ओबराईन	171
29. लोक संस्कृति के केनवास पर कालिदास के चित्र मुकेश कुमार शाह	175
30. कालिदास के ग्रन्थों में वर्णित लोक धर्म एवं विश्वास श्रीमती मन्जू यादव	183
31. बाघ की लोक चित्रकला रितेश लोट	189
32. हिन्दू संस्कारों में निहित प्रतीकात्मक लोकविश्वास रश्मि ठाकुर	197
33. प्राचीन परम्परा के लोक देवत्व एवं कुल देवत्व वन्दना गुप्ता	209
34. उत्तर भारतीय लोक संस्कृति एवं भक्ति आन्दोलन ममता सिंह	215
35. लोक संस्कृति एवं राष्ट्रवाद पूर्णिमा लोदवाल, सुरेश बाटड एवं बिन्दु महावर	223
36. मालवा का लोक उत्सव-फूलडोल ग्यारस हेमन्त लोदवाल	225
37. मध्यकालीन लोक-संस्कृति के उन्नायक संत रविदास मुकेश कुमार जाटव	229
38. मालवांचल की पूर्वमध्यकालीन लोक वेशभूषा प्रीति बागडे	235
39. मालवा की परमारकालीन लोक मूर्तियाँ प्रेम नारायण सूर्यवंशी	245
40. मालवा के गणगौर पर्व का ऐतिहासिक अध्ययन सुनिता जैन	249

मालवांचल की पूर्वमध्यकालीन लोक वेशभूषा

प्रीति बागडे

प्राचीन काल से ही भारत में ऋतु के अनुरूप वस्त्र धारण करने की परम्परा रही है साहित्य में भी ऋतु के अनुरूप वस्त्रों का विवरण मिलता है। ऋतुसंहार में वर्णित है कि स्त्रियाँ ग्रीष्म में "दुकुल" की बनी हल्की साड़ी, बसन्त में केशरिया साड़ी तथा केशरिया एवं लाल स्तन पट्टा धारण करती थी। "मानसोल्लास" एवं "कर्पूरमंजरी" में भी ऋतु के अनुरूप वस्त्र धारण करने के निर्देश हैं। इसमें वसन्त ऋतु में सिल्क या सूती बारीक तथा आकर्षण वस्त्र, ग्रीष्म ऋतु में वेत वस्त्र, वर्षा ऋतु में रंगीन लाल, गुलाबी या अन्य गहरे रंगों के वस्त्र तथा शरद ऋतु में ऊनी वस्त्र धारण करना चाहिए।

प्रारंभ में बिना सिले वस्त्रों का प्रयोग होता था। वर्तमान समय में भी पूजा या अन्य किसी ऐसे अवसर पर बिना सिले वस्त्रों का प्रयोग उपरोक्त कथन की पुष्टि करता है।¹

विभिन्न स्रोतों के आधार पर स्त्रियों के तीन प्रकार के वस्त्र परिलक्षित होते हैं।

1. उत्तरीय
2. कंचुक (चोली)
3. लहंगा